सिकन्दर और डायोजनीज़ की मुलाक़ात

शाम्भवी क्रिस्चन द्वारा पुनर्लिखित एक कहानी

लगभग रोज़ डायोजनीज़ अपनी चुनिन्दा जगह पर आराम करते हुए दिखते और यह जगह थी मिट्टी से बना हुआ एक बड़ा-सा कनस्तर यानी बैरल; उस बैरल को उन्होंने अपना घर ही बना लिया था। प्राचीन ग्रीस के ये एक महान दार्शनिक अपना अधिकांश समय इसी तरह व्यतीत करते—कोरिन्थ शहर के बाहरी इलाकों में, लिटाकर रखे गए एक बैरल के अन्दर वे बैठे रहते, आस-पास की गलियों के कुत्ते उनके साथी होते, और लोग अपने जीवन से सम्बन्धित सभी प्रश्नों का समाधान पाने लगातार उनके पास आते रहते।

कनस्तर, बैरल ही क्यों? तो यह समझ लीजिए कि डायोजनीज़ की असामान्य जीवनशैली का, उनके निरालेपन का यह तो बस एक नमूना भर था। अपने प्रज्ञान और समझदारी के लिए वे जितने विख्यात थे, उतने ही वे अपने अपम्परागत व्यवहार के कारण लोगों में कभी हँसी-मज़ाक तो कभी डर का कारण भी थे। उदाहरण के लिए कहें तो डायोजनीज़ को शानोशौकत और रईसियत के नाम से ही चिड़ थी और वे ज़रूरत के कम-से-कम सामान में अपना गुज़र-बसर किया करते थे। वे अकसर किसी बात की चरम सीमा तक चले जाते थे जिससे कि वे लोगों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकें। इसीलिए यह कनस्तर।

डायोजनीज़ का मानना था कि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में, उचित तरीक़े से जीवन जीने में और सच बोलने में ही खुशी है। उनकी एक बात जो प्रसिद्ध थी वह यह कि वे सड़कों पर जा रहे राहगीरों के चेहरे के नज़दीक एक जलती हुए मोमबत्ती या लालटेन ले जाकर कहते कि वे एक सच्चे इन्सान की खोज कर रहे हैं—ऐसा इन्सान जो सच्ची मानवता का जीता-जागता उदाहरण हो।

स्वाभाविक है कि इन असामान्य उपदेशक के बारे में उस राज्य के प्रशासक को भी पता चला, और वह प्रशासक था सिकन्दर। इस साहसी युवा सम्राट ने बीस वर्ष की आयु में ही सिंहासन हासिल कर लिया था और आगे चलकर इसने विश्व के सबसे विशाल साम्राज्य की स्थापना की। फिर भी एक बात थी जो उसकी महत्त्वाकांक्षाओं और अतुल्य बल के बिलकुल विपरीत थी; और वह थी कि सिकन्दर को दर्शनशास्त्र में हमेशा ही रुचि रही। वह सत्य के स्वरूप के बारे में जानना चाहता था।

सिकन्दर के राजा बनते ही, देश-भर से तत्त्वज्ञानी और राजनीतिज्ञ बड़ी संख्या में एथेन्स में उसके दरबार में आकर उसके सामने नतमस्तक होने लगे, उसे क़ीमती तोहफ़े देकर और उसकी तारीफ़ें करके उसका समर्थन जीतने की कोशिश करने लगे। मिलने आए इन्हीं आगन्तुकों से सिकन्दर को जब डायोजनीज़ के बारे में पता चला तो उसे बड़ा कौतुहल हुआ! डायोजनीज़ भी उसके दरबार में आएँगे इस आशा में वह उनकी प्रतीक्षा करने लगा। वह प्रतीक्षा करता रहा, और प्रतीक्षा करता रहा।

परन्तु उन वृद्ध दार्शनिक को इस नए प्रशासक में कोई दिलचस्पी नहीं थी। डायोजनीज़ कोरिन्थ में ही रहे, सुख-चैन से अपने कनस्तर में दिन बिताते रहे।

अन्ततः सिकन्दर ने यह तय किया कि अब उसके सामने एक ही सम्मानजनक रास्ता है, और वह है कोरिन्थ की यात्रा करना। तो एक दिन वह अपने शाही लशकर के साथ निकल पड़ा। रास्ते में उसके सलाहकारों ने उसे इस मुलाक़ात के लिए तैयार करने की कोशिश की। वे कहने लगे, “महाराज, डायोजनीज़ बहुत ही विचित्र है। वह बहुत-ही झगड़ालू और चिड़चिड़ा इन्सान है। वह सामाजिक रीति-नीति को नहीं मानता। उसे धन-दौलत और ताक़त से नफ़रत है। वह एक टब में रहता है! कोई नहीं बता सकता कि वह कब क्या कहेगा या क्या करेगा।”

परन्तु हर चेतावनी राजा की दिलचस्पी को और बढ़ाने का ही काम कर रही थी।

अब हुआ यह कि उस दिन डायोजनीज़ ने अपना कनस्तर छोड़कर, सड़क के किनारे लेटने का निश्चय किया जिससे कि वे ग्रीस के सूरज की गरमाहट का आनन्द उठा सकें। उन्हें चैन की नींद आने ही वाली थी जब उन्हें पास आ रहे जुलूस की आवाज़ें सुनाई दीं—बिगुल बजाते हुए धूमधाम से आते लशकर की आवाज़ें, ढोल-नगाड़ों की ढम-ढम और मिट्टी में टकबक करते घोड़ों के खुरों की टाप।

डायोजनीज़ ने अपनी कोहनी का सहारा लेते हुए करवट ली और सड़क की तरफ़ देखा। उड़ती हुई धूल में उन्हें हवा में लहराते शाही ध्वज दिखाई दिए। वे फिर से लेट गए।

जब राजा और उसका लशकर वहाँ आ पहुँचे जहाँ डायोजनीज़ आराम कर रहे थे, तो एक सिपाही कह उठा, “वो रहे!” सभी रुक गए। सम्राट सिकन्दर अपने घोड़े से उतरकर, उन दार्शनिक की तरफ़ बढ़ा जो कोहनी का टेक लगाकर लेटे हुए थे।

डायोजनीज़ ने उस युवा शासक को देखा, शानदार लिबास और चमचमाता शाही टोप पहने हुए, उनके सामने खड़े उस व्यक्ति का रंग-ढंग बड़ा राजसी था।

सिकन्दर ने डायोजनीज़ का अभिवादन किया और कहा, “मैं सिकन्दर हूँ, महान सम्राट सिकन्दर! एथेन्स में अपने राज दरबार से इतनी दूर मैं बस आपसे मिलने और आपसे ज्ञान पाने आया हूँ। पर इससे पहले मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ—क्या ऐसा कुछ है जो आप मुझसे चाहते हैं? इस राज्य की हर चीज़ पर मेरा अधिकार है। क्या ऐसा कुछ है जो मैं आपको दे सकता हूँ, क्या मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूँ?”

डायोजनीज़ ने उत्तर दिया, “हाँ, बिलकुल।”

उनका उत्तर सुनने के लिए राजा बड़ा उत्सुक हुआ।

“एक किनारे हो जाओ। दिखता नहीं? मैं ग्रीस के सूरज की धूप का आनन्द ले रहा हूँ। और तुम इस धूप को रोक रहे हो।”

यह सुनकर चारों तरफ़ सन्नाटा छा गया।

डायोजनीज़ की आज्ञा से सिकन्दर के अहंकार को जो चोट पहुँची थी, उससे वह कुछ क्षण बाद उबरा और चुपचाप एक ओर हट गया। जैसे ही वह रास्ते से हटा, सूरज की चमचमाती किरणें एक बार फिर उन दार्शनिक के ऊपर पड़ने लगीं और उनकी आँखें मीठी-सी ख़ुशी से दमक उठीं।

सिकन्दर ने डायोजनीज़ से विदा ली और अपने साथियों के साथ वापस घर की ओर चल दिया। इस मुलाक़ात और इससे मिले ज्ञान के बारे में वह जितना ज़्यादा सोचता रहा, उतना ही इन अनोखे शिक्षक के प्रति उसकी सराहना बढ़ती गई।

यात्रा के दौरान सिकन्दर के सेवक उन वृद्ध दार्शनिक का मज़ाक उड़ाते जा रहे थे। उनकी बातें सुनकर सिकन्दर उनकी ओर मुड़ा और उसने उनसे कहा, “अगर मैं सिकन्दर नहीं होता, तो मैं डायोजनीज़ होना पसन्द करता।”

बाद में जब डायोजनीज़ ने यह बात सुनी तो उन्होंने कहा, “अगर मैं डायोजनीज़ नहीं होता, तो मैं भी डायोजनीज़ होना पसन्द करता।”

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।